देवदार का वृक्ष

(दिव्य कथा)

5

हिमालय की *तलहटी* में एक राजा राज्य करता था। एक बार उसके मन में विचार आया कि वह एक ऐसा महल बनाए जैसा आज तक किसी ने न देखा हो। उसने निश्चय किया कि वह एक ऐसा *अनूठा* महल बनाएगा जो केवल एक स्तंभ पर टिका हो और वह स्तंभ उसके राज्य के सबसे विशाल वृक्ष से बनाया जाएगा।

हिमालय की ऊँची-ऊँची पहाड़ियों में अनेक विशाल वृक्ष होते हैं– चीड़, बाँस और देवदार। इनमें देवदार के वृक्ष सबसे ऊँचे, *सुगंधित* और मजबूत होते हैं। देवदार का अर्थ ही है, देवताओं का वृक्ष।

राजा ने अपने मंत्री को बुलाकर कहा, "लकड़हारों को बुलाकर कहिए कि वे जंगल के सबसे ऊँचे और विशाल देवदार के वृक्ष को काटकर ले आएँ।" नन्हीं राजकुमारी बोली, "पिताजी, देवदार पवित्र वृक्ष है। इसकी लकड़ी से तो केवल मंदिर बनाए जाते हैं।" राजा बोला, "यह तो और भी अच्छी बात है, मेरा महल भी मंदिर जैसा *महिमावान* बनेगा।"

मंत्री ने पर्वतों से देवदार वृक्ष लाने के लिए अनेक लोगों को भेजा। वे लोग कुछ दिन बाद लौट आए। उन्होंने कहा, "महाराज! पर्वतों पर बहुत बड़े-बड़े वृक्ष हैं, पर उतने बड़े वृक्षों को इतनी दूर तक खींचकर ला पाना संभव नहीं है।"

राजा ने राजकुमार से कहा, "अपने घुड़सवारों को लेकर जाओ और घोड़ों से वृक्ष को खिंचवाकर यहाँ लेकर आओ।"

राजकुमार कुछ दिनों में ही घोड़ों के साथ वापस आ गया। उसने कहा, "महाराज! वे वृक्ष इतने विशाल हैं कि हमारे घोड़े एक इंच भी नहीं हिला पाए।"

राजा ने कहा, "ठीक है, अब तुम हाथियों को लेकर जाओ और वृक्ष को लेकर आओ।" हाथी ऊँचे-नीचे पर्वतों पर चढ़ नहीं पाए और राजा के *कारिंदे* वापस आ गए।

राजा को बहुत क्रोध आया। वह बोला, "यदि पर्वतों से देवदार का वृक्ष नहीं लाया जा सकता तो मैदान में ढूँढो। वहाँ भी कोई ऐसा विशाल वृक्ष अवश्य होगा। ऐसा विशाल वृक्ष ढूँढकर सात दिन में यहाँ लाया जाए।"

राजा के *कारिंदे* को महल के निकट ही एक वृक्ष मिल गया। आसपास के गाँव के लोग उस वृक्ष की पूजा करते थे। वह वृक्ष दिव्य, मजबूत तथा विशाल था। उनका मानना था कि वह वृक्ष *अलौकिक* है जिससे उनके राज्य व समाज की *श्री-वृद्धि* होती है।

गाँव के लोगों को जब यह ज्ञात हुआ कि राजा ने उस वृक्ष को काटकर उससे अपने महल का स्तंभ बनाने का *निर्णय* कर लिया है, तो उन्हें बहुत दुख हुआ। वे फूलमालाएँ लेकर उस वृक्ष के पास आए। दीपक जलाकर चारों ओर रख दिए और शाखाओं पर मालाएँ लटकाकर *वेदनापूर्ण* स्वर में गीत गाने लगे। ऐसा लग रहा था। जैसे वे ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हों कि राजा के विचार बदल जाएँ और उन्हें इस भूल के लिए भगवान क्षमा करें।

उस रात राजा अपने महल में *निद्रामग्न* थे। अचानक उनके स्वप्न में चमकते हरे पत्तों के *परिधान* में लिपटी एक दिव्य मूर्ति प्रकट हुई। पत्तियों की सरसराहट जैसी मधुर आवाज में राजा से बोली, "देवदार के इस वृक्ष पर मेरा निवास है। लोगों का कहना है कि आप इस वृक्ष को काटना चाहते हैं। मेरी विनती है कि आप यह विचार त्याग दें।"

राजा ने कहा, "मैं तो इसे काटने का निश्चय कर चुका हूँ क्योंकि मेरे निकट के क्षेत्र में एकमात्र यही ऐसा विशाल वृक्ष है जो महल के स्तंभ के रूप में काम आ सकता है।"

देवी ने फिर कहा, "राजन्! विचार कीजिए मैंने सदैव लोगों का कल्याण किया है। मुझ पर पक्षी बसेरा बनाते हैं। वन्य प्राणी मेरे तने से अपने शरीर को खुजलाकर आराम करते हैं। मेरे नीचे हजारों लताएँ पनपती हैं। मैं मिट्टी को कटने से रोकती हूँ। बच्चे मेरे आस-पास खेलते हैं। दूर से आते हुए यात्री पलभर मेरी शीतल छाया में ठहरकर विश्राम करते हैं। मुझे काटने से इन सभी प्राणियों को कष्ट होगा।"

राजा ने कहा "हे ममतामयी देवी! आपका कथन *पूर्णतया* सत्य है, मगर मैं क्या वरूँ? मैं तो आपके वृक्ष को काटने का निश्चय कर चुका हूँ।"

देवी ने अपना सिर झुकाकर दुःखी स्वर में कहा, "हे राजन्! यदि तुम्हारा यही निश्चय है, तो मेरी एक प्रार्थना स्वीकार कर लो। मेरे शरीर को तीन हिस्सों में काटकर गिराना। सबसे पहले मेरे हरे-भरे मुकुट जैसे *शीर्ष भाग* को काटना। फिर मेरे शाखाओं वाले मध्य भाग को गिराना। अंत में मेरे सर्वाधिक सुदृढ़ और मजबूत आधार को काटकर भूमि पर गिराना।"

राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने पूछा, "देवी! आपकी प्रार्थना बड़ी विचित्र है। आप मृत्यु का कष्ट तीन बार क्यों भोगना चाहती हैं?"

देवी ने कहा, "राजन्! कारण स्पष्ट है। मेरे नीचे भूमि पर सैंकड़ों देवदार के पौधे उग आए हैं। यदि मुझे एक ही बार में काटकर गिराओगे तो मेरे भार से ये सभी पौधे नष्ट हो जाएँगे। परंतु यदि मुझे तीन बार में थोड़ा-थोड़ा करके काटोगे जो संभवतः कुछ पौधे बच जाएँ जो बड़े होकर लोगों के काम आएँ।"

राजा ने देवी की प्रार्थना स्वीकार कर ली। देवी स्वप्न से *विलीन* हो गई।

दूसरे दिन राजा ने अपने परिवारजनों, मंत्रियों, दरबारियों और जनता को बुलाकर कहा, "अब मेरे महल का स्तंभ देवदार के तने के स्थान पर पत्थर का बनेगा। वृक्ष को नहीं काटा जाएगा।"

राजा ने अपना महल पत्थर के स्तंभ पर बनवाया। उसके चारों ओर सुंदर बाग लगवाए जिनमें बहुत से वृक्ष और फूल-पौधे थे। बच्चे और बड़े-बूढ़े इस बाग में आते। वृक्षों की शीतल छाया मे बैठते। बच्चे वहाँ खेला करते थे।

राजा की तरह अन्य लोगों ने भी लकड़ी के मकान बनवाने बंद कर दिए। जंगलों में वृक्ष अपनी विशाल भुजाएँ फैलाकर लोगों को छाया और *जीवनदायिनी* हवा प्रदान करते रहें।

शब्द-अर्थ

तलहटी — तली *(bottom)*,
सुगंधित — खुशबूदार *(aromatic)*,
कारिंदे — सेवक *(slave)*,
श्री-वृद्धि — ऐश्वर्य की वृद्धि, उन्नति *(prosperity)*,
वेदनापूर्ण — दुःख से भरी *(mournful)*,
परिधान — वस्त्र *(vesture)*,
शीर्ष भाग — सबसे ऊपर का हिस्सा *(top part)*,
जीवनदायिनी — जीवन देने वाली *(life-giver)*।
अनूठा — निराला *(unique)*,
महिमावान — गौरवशाली/महान *(dignified)*,
अलौकिक — जो लोक में न मिलता हो *(supernatural)*,
निर्णय — निश्चय *(decision)*,
निद्रामग्न — नींद में डूबा *(slumber)*,
पूर्णतया — पूरी तरह से *(fully)*,
विलीन — छिप जाना *(disappeared)*,

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए–

तलहटी	निश्चय	स्तंभ	सुगंधित	मंत्री
महिमावान	घुड़सवारों	अलौकिक	निर्णय	आश्चर्य
वेदनापूर्ण	निद्रामग्न	ममतामयी	पूर्णतया	जीवनदायिनी

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) राजा किस प्रकार का महल बनवाना चाहता था?

(ख) राजा ने अपने मंत्री को क्या आज्ञा दी?

(ग) देवदार के वृक्ष की क्या-क्या विशेषताएँ हैं?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) गाँव के लोग देवदार के वृक्ष की पूजा करते थे, क्योंकि वे मानते थे कि-

- ☐ वह वृक्ष अलौकिक था।
- ☐ उस पर देवी का निवास था।
- ☐ वह वृक्ष बहुत प्राचीन था।

(ख) देवी राजा के स्वप्न में प्रकट हुई क्योंकि....

- ☐ वह राजा को दर्शन देना चाहती थी।
- ☐ वह राजा से बदला लेना चाहती थी।
- ☐ वह राजा को वृक्ष काटने से रोकना चाहती थी।

(ग) देवी ने राजा से वृक्ष को कितने हिस्सों में काटने को कहा?

☐ दो ☐ तीन ☐ चार

2. वाक्यों को पूरा कीजिए–

घुड़सवारों, स्वीकार, हिमालय, आलौकिक, मंत्री

(क) ..... की तलहटी में एक राजा राज्य करता था।

(ख) देवदार एक ..... वृक्ष है।

(ग) राजा ने ..... को बुलाकर लकड़हारों को आदेश देने को कहा।

(घ) राजा ने राजकुमार से अपने ..... को लाने के लिए कहा।

(ङ) राजा ने देवी की प्रार्थना ..... कर ली।

3. सही वाक्यों के सामने (✓) का तथा गलत के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) देवदार का अर्थ ममतामयी व बड़ा वृक्ष होता हैं। ☐

(ख) देवदार के वृक्ष सबसे ऊँचे और सुगंधित होते हैं। ☐

(ग) राजा ने अपना महल देवदार के वृक्ष से बनवाया। ☐

(घ) राजा ने देवी की प्रार्थना स्वीकार कर ली। ☐

(ङ) राजा की तरह सभी लोगों ने मकान बनवाने शुरू कर दिए। ☐

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) राजा का निर्णय ज्ञात होने पर गाँव के लोगों ने क्या किया?

(ख) देवी ने स्वप्न में राजा से क्या निवेदन किया?

(ग) देवी ने वृक्ष को तीन बार काटने को क्यों कहा?

(घ) राजा ने अपना निर्णय क्यों बदल दिया?

(ङ) राजा ने अपने महल के चारों ओर क्या लगवाया?

(च) राजा ने अपना महल कैसे स्तंभ पर बनवाया?

भाषा-ज्ञान

1. सही विकल्प पर (✓) का निशान लगाएँ–

(क) जातिवाचक संज्ञा नहीं हैं-

☐ महल ☐ लकड़ी ☐ हिमालय

(ख) 'अनूठा' का पर्याय नहीं है-

☐ निराला ☐ चित्रित ☐ अनोखा

(ग) शुद्ध वर्तनी है-

☐ स्वधीक ☐ सर्वाधिक ☐ सर्वाधीक

2. समझिए और लिखिए–

प्रधान	+	मंत्री	= प्रधानमंत्री	राज	+	महल	= .....
राज	+	कुमारी	=	शुभ	+	चिंतक	= .....
लकड़	+	हारा	=	निद्रा	+	मग्न	= .....
महा	+	राज	=	महिमा	+	वान	= .....

क्रियात्मक गतिविधि

- सभी बच्चे अपने आस-पास एक-एक वृक्ष लगाएँ।
- अपने प्रिय मित्र को उसके जन्मदिन पर उपहार के रूप में एक पेड़ की पौध दें।
- पुस्तकालय से 'रस्किन बॉन्ड' की हिंदी में मुद्रित अन्य कहानियाँ पढ़ें।